

साई का रूप बनाके आया रे

साई का रूप बनाके आया रे डमरू वाला,
कशी को छोड़ के शिव ने शिर्डी में डेरा डाला रे,
साई का रूप बनाके.....

त्याग दया त्रिशूल कमंडल हाथ में छड़ी उठा ली,
ना जाने क्या सोचके झोली कंधे पे लटका ली ,
ओ गंगा में विरसर्जित कर दी शिव ने सर्पो की माला रे,
साई का रूप बनके.....

शिव है साई साई शिव है बात नहीं यह झूठी हो,
भस्म है ये भोले शंकर की कहते है जिसको वभुती,
जो मानगो गे दे दे गे है शिव सा भोला भाला,
साई का रूप बनके....

साई तपस्वी साई योगी साई है सन्यासी,
घर घर में है वासा उसीका वोह है घट घट वासी हो,
शिव शम्बू शम्बू जपले या जप साई की माला रे,
साई का रूप बनके.....

<https://alltvads.com/bhajan/lyrics/id/3641/title/sai-ka-roop-banake-aaya-re-damru-vala-kashi-ko-chod-ke-shiv-ne-shirdi-me-dera-dala-re>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |